## पाश की कविता

# मेरी माँ की आँखे

जब एक लड़की ने मुझसे कहा–
मैं बहुत सुंदर हूँ
तो मुझे उसकी आँखों में दोष लगा था
मेरी जानिब तो वे सुंदर थे
जो मेरे गाँव में वोट माँगने
या उद्‌घाटन की रस्म के लिए आते हैं

एक दिन
जट्टू की दुकान से मुझे सूँघ मिली
कि उनके सिर का सुनहरी ताज चोरी
का है...
मैंने उसी दिन गाँव छोड़ दिया
मेरा विश्वास था कि यदि ताजोंवाले
चोर हैं
तो फिर सुंदर कोई और हैं...

शहरों में जगह–जगह मैंने असुंदरता
देखी
प्रकाशन–गृहों में, कॉफी हाऊसों में
दफ्तरों और थानों में–
और मैंने देखा, असुंदरता की यह नदी
दिल्ली के गोल पर्वत से रिसती है
और उस गोल पर्वत में सुराख करने के
लिए
मैं असुंदरता में घुसा
असुंदरता के साथ लड़ा
और कई लहू–लुहान वर्षों में से गुजरा
और जब मैं चेहरे पर युद्ध के निशान
लेकर
दो पल के लिए गांव आया हूँ
और वहीं चालीस वर्ष की लड़की
अपने लाल को बदसूरत कहती है
और मुझे फिर उसकी आँखों में दोष
लगता हैं।

–पाश

# ‘ डाक्टर डीसी के लाभ ’

फरीदाबाद (म.मो.)। प्रशासनिक स्तर पर जनता प्रवीण कुमार का भले ही कोई लाभ न उठा सके परन्तु उनकी डाक्टरी कुछ लोगों को बहुत रास आ रही है। डा. प्रवीण कुमार जो पहले कभी बादशाह खान हस्पताल में अपनी ओपीडी लगाकर मरीज देखते थे अब अपने सरकारी आवास में रात को 8 से 10 बजे तक मरीज देखते हैं। अधिकतर मरीज इनके द्वारा दी गई दवा को गेट से बाहर आते ही फेंक देते हैं और 2 या 3 दिन के बाद आकर डाक्टर साहब को बताते हैं कि उनकी दवा से काफी आराम मिला है, बस एक दो खुराक और दे दो तो रोग जड़ से ही साफ हो जाएगा। इतना सुनते ही डाक्टर साहब प्रसन्न हो जाते हैं और 2–3 दिन की खुराक और दे देते हैं। उसे भी वे मरीज बाहर आ कर फेंक देते हैं। इस तरह एक निश्चित समय तक दवा सेवन के बाद वे घोषित कर देते हैं कि उनका रोग जड़ से समाप्त हो गया है। इसके लिए वे उनका आभार प्रकट करते हुए चापलूसी पूर्ण गुणगान करने के बाद कहते हैं, जनाब वह फलां तहसीलदार या थानेदार या बीडीओ आदि उनका फलां काम नहीं कर रहा हैं, जरा सा फोन कर देते तो बड़ी मेहरबानी होगी।, चापलूजी के झाड़ पर चढे डीसी साहब तुरंत सम्बंधित अधिकारी को फोन टन–टना देते हैं और उस नकली मरीज का न होने वाला असली काम तुरंत हो जाता है।

# हाईकोर्ट को अपनी अवमानना करानी जरूरी थी?

दिल्ली (म.मो.)। गत पखवाड़े एयर इंडिया के करीब 700 पायलेट महीनों चली बेनतीजा बातचीत के बाद हड़ताल पर चले गए। तमाम तरह की धमकियां बेकार सिद्ध होने के बाद प्रबंधन यानी कि सरकार सही रास्ते पर आई और 10 दिन में 1200 करोड़ का नुकसान उठा कर हड़ताल खुलवाई। वैसे जब हड़ताल नहीं भी रहती तो एयर-इंडिया प्रतिदिन 57 करोड़ खर्च करके मात्र 36 करोड़ प्राप्त करती है यानी कि 21 करोड़ का शुद्ध घाटा।

इस पूरे मामले में सरकार से कहीं अधिक छीछालेदर दिल्ली हाई कोर्ट की हुई जिसने हड़ताल के पहले ही दिन पायलेटों को काम पर लौटने का आदेश दे डाला। इसके न मानने पर कार्ट ने उन्हें अवमानना का नोटिस दे डाला। पायलेट टस से मस न हुए। अंत में सरकार झुकी और पायलेट काम पर आए। पायलेट तो काम पर आने ही थे और आ गए। लेकिन हाई कोर्ट की अवमानना व उसके नोटिसों का क्या हुआ? कोई पूछे इस हाई कोर्ट से कि उसे बीच में इस तरह से हड़ताल तोड़ने सम्बंधी आदेश जारी करने का क्या अधिकार था। देश में बाकायादा ट्रेड यूनियन सम्बंधी कानून हैं उससे उतर हाई कोर्ट को उछल कूद करने की क्या जरूरत थी? किसी ने ठीक ही कहा है कि अपनी इज्जत अपने हाथ में होती है।

## पेज 1 का शेष भाग

### काम काज में जीरो, मजमेबाजी में हीरो

भरवा कर आस-पास की झुग्गी बस्तियों में बांटने के आदेश दिए। यानी सारा प्रशासनिक अमला उस दिन खिचड़ी पकाने व बांटने में लगा रहा। अगला भंडारा 17 मई को ओल्ड फरीदाबाद में लगाया जाएगा। डाक्टर प्रवीण कुमार के रहने से जिला प्रशासन वेशक रसातल में चला जाए लेकिन भंडारों की कोई कमी रहने वाली नहीं है। प्रशासन चलाने का इन्हें न तो ज्ञान है न रूचि लेकिन जो अधिकारी प्रशासनिक कार्य कर सकते हैं, उन्हें यह आए दिन भंडारे बनवाने व बांटने में लगाए रखते हैं।

### राजनेताओं को मिला खेल का मैदान

भाजपा जब सत्ता में थे तो इन्होंने कौन सी कसर छोड़ी थी और यदि अब फिर सत्ता में आ जाए तो यही सब पुन: करेंगे।

भूमि अधिग्रहण द्वारा लूट का गणित सझमना बिल्कुल सरल है। एक और जहां कॉलोनाइजर व बिल्डर किसानों से सीधे सौदेबाजी करके जमीन खरीदने के बाद सरकार को मोटी फीस व रिश्वत दे कर जनता को प्लॉट व फ्लैट बेचते हैं वहां कोई झगड़ा नहीं होता। लेकिन जहां सरकार लाठी गोली के बल पर किसानों से जमीन छीन कर मोटे मुनाफे कमाती है, वहां झगड़े खड़े होना स्वाभाविक है। नोएडा से आगरा तक जाने वाले यमुना एक्सप्रेस के दोनों और की जमीन सरकार ने 500 रू. प्रति वर्ग गज के भाव किसानों से छीन कर 5 से 8 हजार रू. प्रति वर्ग गज के भाव से जेपी कंपनी को बेच दी। कंपनी इसे विकसित करके आगे और ऊंचे दामों पर बेच कर मोटा मुनाफा कमायेगी। नोएडा में यह बात किसी से छिपी नहीं है कि सरकार द्वारा बेचे गए। प्लाटों के प्रति एकवर्ग गज पर मायावती के एजेंट अलग से 3000 रू. वसूलते है। जानकार बताते हैं कि इस धंधे में मायावती रोजाना सैंकड़ों करोड़ रूपए कमाती है और इसी पैसे से फिर सोने की खरीदारी करके बेसमेंटो में भरवा देती है। जबकि दूसरी और भूमि छिन जाने के बाद भूमिहीन हुए किसान भुखमरी की ओर बढ़ते जाते हैं। आखिर इस तरह का जुल्म किसान कब तक सह सकते है? उक्त खूनी संघर्ष तो होना ही था। यदि समय रहते इस समस्या का उचित समाधान नहीं किया गया तो स्थिति और भी भयंकर हो सकती ह।

कार्टून कोना

**फरीदाबाद के पाठकों के लिए मजदूर मोर्चा अब हॉकरों के माध्यम से उपलब्ध है। जो भी हॉकर आपके यहां अखबार देने आता है, वह मांगने पर मज़दूर मोर्चा अवश्य देगा। डाक से अखबार पहुंचे या नहीं, इसका कोई ठिकाना न होने के कारण हमने यह नई व्यवस्था की है। अखबार मिलने में किसी तरह की समस्या होने पर हमारे प्रसार प्रबंधक से निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें :**

**दीक्षित न्यूज एजेंसी, 9811159238**

**सूचना : प्रिय पाठकों छपाई की बढ़ती लागत के चलते न चाहते हुए भी आपके इस समाचार पत्र की सहयोग राशि 2 रुपए की जा रही है। आशा है कि सहयोग बनाए रखेंगे।**